

कपोलकथा

दुःख का पुनर्जन्म



जयदीप शेखर



PREVIEW

दैत्य का पुनर्जन्म

कपोलकथा

जयदीप शेखर



PREVIEW

PREVIEW

Cover Photo Credit



ancient-origins.net

The Wendigo: A horrifying creature of Algonquian Native American legends that would devour human flesh to survive a harsh winter.

-: eBook :-

Daitya ka Punarjanma: Resurrection of the Demon

Author: Jaydeep Shekhar

Copyright © 2006: Author

Cover-designed, Composed and Published by JagPrabha.

Contact: jagprabha.bhw@gmail.com

Available at: jagprabha.in

Price: Rs. 50.00

PREVIEW

दैत्य का पुनर्जन्म

पुराने जमाने की बात है।

एक दैत्य को बड़ी मुश्किलों से मारा गया। जब उसके शव को जलाया गया, तब उसकी हड्डियाँ नहीं जलीं। हड्डियाँ इतनी मजबूत थीं कि उन्हें तोड़ा भी न जा सका। किसी ज्ञानी ने बताया कि यह दैत्य अपनी हड्डियों से फिर जिन्दा होने की अलौकिक शक्ति रखता है। अतः अगर हड्डियाँ नष्ट न हो पा रही हों, तो इन्हें दूर-दूर भेजवा दिया जाय, ताकि ये एक स्थान पर फिर कभी इकट्ठी न हो सकें।

यह घटना एक रेगिस्तानी इलाके की है। उस रेगिस्तान से गुजरने वाले काफिलों को एक-एक हड्डी थमा दी गयी और इस तरह, दैत्य की हड्डियाँ दुनिया के दूर-दूर इलाकों तक फैल गयीं। हाँ, दैत्य के गले की एक छोटी-सी हड्डी सुनहरे रंग की थी, जो देखने में सुन्दर थी। इसे वहाँ की राजकुमारी को उपहारस्वरूप दे दिया गया। राजकुमारी को सोने से ज्यादा चाँदी पसन्द था। राजकुमारी ने उस सुनहरी हड्डी को चाँदी में मढ़वा कर बालों में बाँधने वाला आभूषण बनवा लिया।

उस ज्ञानी ने इस छोटी-सी हड्डी के बारे में बताया कि अगर भविष्य में यह दैत्य फिर कभी जिन्दा हो गया, तो इसी छोटी हड्डी को उसके सीने में घोंप कर उसे फिर से मारा जा सकता है और वह उसकी अन्तिम मृत्यु होगी- यानि वह कभी जिन्दा नहीं होगा।

सदी बीत गयी। तीन-चार पीढ़ियाँ गुजर गयीं। उस दैत्य की कहानी लोग भूल गये।

एक कबीला था, जहाँ हर साल लड़ाई-भिड़ाई की प्रतियोगिताएं आयोजित होती थीं। एक प्रतियोगिता ऐसी थी, जिसमें किसी भी तरह के अस्त्र-शस्त्र के इस्तेमाल की अनुमति थी।

एक बार एक योद्धा करीब चार हाथ लम्बा हड्डी-जैसा एक अस्त्र लेकर उस खुली प्रतियोगिता में उतरा। यह अस्त्र वज्र के समान मजबूत साबित हुआ। अपने अनोखे अस्त्र से उसने बाकी सभी योद्धाओं के तलवार-कटारों, बरछे-भालों इत्यादि को तोड़ दिया। वह खुली प्रतियागिता का विजेता बना।

उस कबीले के सराय के मालिक का बेटा उस अनोखे अस्त्र के प्रति आकर्षित हुआ। उसने मुँहमाँगी कीमत देकर उस अस्त्र को खरीद लिया।

वह नौजवान सनकी किस्म का था। अपनी सराय के तहखाने में वह कीमियागिरी के तरह-तरह के प्रयोग किया करता था। उसने उस अस्त्र की जब जाँच की, तो पाया कि वह वास्तव में हड्डी थी। उसकी बनावट घुटने से एड़ी के बीच पायी जाने वाली हड्डी-जैसी थी। उसे आश्चर्य हुआ। अगर किसी के घुटने से एड़ी तक की लम्बाई चार हाथ हो, तो उसका पूरा शरीर तो दैत्य-जैसा होगा!- उसने सोचा।

वह हड्डी गजब की मजबूत थी। उसने कई तरह से आजमाकर देख लिया- उसे तोड़ना असम्भव था!

उस नौजवान ने ऐलान करवा दिया कि जो कोई इस-जैसा अस्त्र लेकर आयेगा, उसे अच्छी कीमत देकर उससे वह अस्त्र खरीद लिया जायेगा। उस प्रतियागिता में दूर-दूर से लोग आते थे- न

केवल भाग लेने, बल्कि प्रतियोगिताओं को देखने के लिए भी। देखते ही देखते सराय-मालिक के बेटे के ऐलान वाली बात दूर-दूर तक फैल गयी।

फिर क्या था, आश्चर्यजनक रूप से दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से अलग-अलग आकार-प्रकार के ऐसे अस्त्र-शस्त्र उस कबीले तक पहुँचने लगे। सराय-मालिक का बेटा पहले उनका आकार-प्रकार मापता, फिर उन पर पत्थर पटक कर उनकी मजबूती जाँचता और फिर सन्तुष्ट होने के बाद अच्छी कीमत देकर उन्हें खरीद लेता। इस बीच लोगों को भी पता चलने लगा कि वज्र-जैसी मजबूत ये चीजें वास्तव में हड्डियाँ हैं- बहुत पुरानी होने के कारण इनका रंग काला भले पड़ गया हो।

आगे चलकर सराय-मालिक के बेटे ने मानव-कंकाल का विधिवत् अध्ययन किया और अलग-अलग हड्डियों के लिए निश्चित कीमत तय कर दी। अपने तहखाने की जमीन पर उसने उन हड्डियों को मानव-कंकाल के आकार में सजा कर रखना शुरू कर दिया।

सालाना लड़ाई-भिड़ाई वाले जलसों के दौरान ऐसी हड्डियों की आवक ज्यादा हो जाया करती थी, क्योंकि तब दूर-दूर से लोग आते थे। इस प्रकार, तहखाने के फर्श पर हड्डियों ने एक दैत्य के कंकाल का आकार ग्रहण शुरू कर दिया।

तेरह वर्ष बीत गये। सराय के तहखाने में दैत्याकार कंकाल का आकार पूरा हो चुका था- सिर्फ छोटी-छोटी दो-चार हड्डियों की कमी रह गयी थी।

हालाँकि इन वर्षों में सराय-मालिक के बेटे ने किसी को भी अपने तहखाने में नहीं आने दिया था, लेकिन तरह-तरह की कहानियाँ इलाके भर में प्रचलित हो गयीं थीं।